पाठ्य वास्तु से सम्बंधित कारक

- विषय वस्तु की प्रकृति।

  विषय वस्तु की प्रकृति बालकों के मानसिक योग्यता एवं परिपक्वता के अनुकूल होनी चाहिए। सीखी जाने वाली विषय वस्तु यदि सरल है तो मध्य श्रेणी का छात्र भी उसे सरलता से सीख सकता है और यदि विषय वस्तु कठिन है तो छात्रों को सीखने में कठिनाई का अनुभव होता है। कठिन पाठ्यवस्तु को याद करने में समय भी अधिक लगता है। अपेक्षाकृत सरल पाठ्यवस्तु के

- विषय सामग्री का स्वरूप।

  सीखने की क्रिया पर सीखी जाने वाली विषय सामग्री का प्रत्यक्ष पक्ष प्रभाव पड़ता है।. कठिन और अर्थहीन सामग्री की अपेक्षा सरल और अर्थ पूर्ण सामग्री अधिक शीघ्रता और सरलता से सीख मिल जाती है। इस प्रकार नियोजित सामग्री की तुलना में 6 सरल से कठिन की ओर सिद्धांत पर नियोजित सामग्री सीखने की क्रिया को सरलता प्रदान करती है।

- विषय वस्तु का आकार।

  विषय वस्तु का आकार अर्थ की लंबाई एवं मात्रा भी छात्रों की अधिगम प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करती है। यही कारण है कि जब विद्यार्थी को ऐसे पाठों को पढ़ने के लिए विवश किया जाता है तो वह इनकी तैयारी उतनी तत्परता एवं मन लगाकर नहीं करता जितना कि छोटे छोटे पाटो को। विस्तृत विषय से वह शीघ्र ही थक एवं उप जाता है।

- विषय वस्तु का क्रम।

  प्रत्येक विषय वस्तु की कठिनाई सर अलग-अलग होती है इसीलिए विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने का क्रम भी उनको सीखने की प्रक्रिया को पर्याप्त रूप से प्रभावित करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से छात्र को पहले सरल विषय वस्तु पढ़ाई जाए मौज में कठिन। ऐसा करने से वह कठिन पाठ्यवस्तु को भी आसानी से सीख सकेगा। दूसरे शब्दों में, छात्रों

के समक्ष पाठ्यवस्तु प्रस्तुत करने समय हमें शिक्षण के महत्वपूर्ण सूत्र सरल से कठिन की ओर का अनुसरण करना चाहिए यह सूत्र पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से संबंध करता है।

- उदाहरण प्रस्तुतीकरण।

प्रत्येक विषय में दो प्रत्यय होते हैं स्थूल और सूक्ष्म। विद्यार्थी स्टूल प्रत्यय को आसानी से समझ लेता है जबकि सूक्ष्म प्रयोग को समझने में उसे कठिनाई होती है। इसलिए ऐसे प्रत्यय का स्पष्टीकरण करने हेतु अध्यापक को उदाहरण का सहारा लेना पड़ता है उदाहरण देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी के दैनिक जीवन से संबंधित हो तथा तर्कसंगत हो।
दूसरे शब्दों में पाठ्यवस्तु को गहनता से समझाने की दृष्टि से अध्यापक को विशिष्ट से सामान्य की ओर अथवा उदाहरण से नियम की ओर शिक्षण सूत्र का प्रयोग करना चाहिए।

- भाषा शैली।

सीखने की प्रक्रिया से भाषा शैली का महत्वपूर्ण हाथ रहता है प्रत्येक लेखक का विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण का तरीका भिन्न होता है एक अच्छे लेखक की पहचान होती है कि वह कठिन से कठिन पाठ्यवस्तु को भी सरल भाषा में व्यक्त कर छात्रों को पाठ्यवस्तु सुहाग्रा बना देता है।
इसी दृष्टि से विषय वस्तु को यदि सरल भाषा में बालक को के समक्ष प्रस्तुत किया जाए तो वह सरलता से उसे सीख लेते हैं कठिन भाषा एवं लंबे-लंबे वाक्य सीखने में अवरोध उत्पन्न करते हैं इसलिए भाषा सरल संछिप्त सुबोध एवं प्रभाव में बनाने का प्रयास किया जाता है।

- दृश्य-श्रव्य सामग्री।

अधिगम को रोचक बनाने में दृश्य श्रव्य सामग्री का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कठिन से कठिन पाठ्य वस्तु को भी दृश्य श्रव्य सामग्री के उपयोग से सुगम बनाया जा सकता है।
लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि जबरदस्ती सहायक सामग्री का प्रयोग पाठ्यवस्तु में किया जाए। वस्तुतः सहायक सामग्री का प्रयोग विषय वस्तु की प्रकृति पर निर्भर करता है तथा उसकी मांग के अनुरूप दृश्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है कहा भी गया है कि बेहूदा बैठूंगी

एवं हास्यास्पद सहायक सामग्री के प्रयोग से तो बिना सहायक सामग्री के पढ़ाना कहीं अधिक श्रेयस्कर होता है।

- रुचिकर विषय वस्तु।

यदि पाठ्यवस्तु रुचिकर है तो छात्रों से खूब मन लगाकर पढ़ते हैं और यदि विषय वस्तु रुचिकर नहीं है तो छात्र सीखने में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं और शीघ्र ही उठ जाते हैं यह थक जाते हैं। इस दृष्टि से पाठ्यवस्तु का का रुचि कार होना अत्यंत आवश्यक है शिक्षण भी एक कला है। अतः अध्यापक को कक्षा शिक्षण करने से पूर्व छात्रों में विषय के प्रति गहन रुचि उत्पन्न करनी चाहिए तथा अपनी सूझबूझ से विषय वस्तु को रोचक बनाने के भरसक प्रयास करने चाहिए।

- विषय वस्तु की संरचना।

विषय वस्तु की संरचना का अधिगम प्रक्रिया को सफल या असफल बनाने में बड़ा हाथ होता है। अतः विषय वस्तु की संरचना के सिद्धांतों का पालन करके विषय वस्तु का संगठन करना चाहिए। इसके अंतर्गत मनोवैज्ञानिक एवं तार्किक पहलुओं पर दृष्टि रखनी चाहिए। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विषय वस्तु छात्र के मानसिक स्तर के अनुरूप हो तथा तार्किक दृष्टि से कठिन से कठिन निगम शिक्षण प्रयोग को समझाने के लिए चित्र, रेखा चित्र, ग्राफ, आंकड़े एवं उदाहरण का यथा स्थान प्रयोग किया जाना समय-समय पर विषय वस्तु को पूर्णगठित भी करते रहना चाहिए।

- विभिन्न विषयों का कठिनाई स्तर।

प्रत्येक विषय की प्रकृति अनूठी होती है। ठीक इसी प्रकार प्रकृति से प्रत्येक छात्र में रूचि का स्वरूप भी उसी के व्यक्तिगत विभिन्नता के संदर्भ मैं सुनिश्चित किया है। इसीलिए एक शिक्षार्थी अंग्रेजी में रुचि लेता है तो दूसरा गणित में तथा तीसरा कला में आदि। विषयों का कठिनाई स्तर बी मूलक एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न होता है और इसलिए एक विषय विद्यार्थी को सरल प्रतीत होता तो दूसरा अत्यंत जटिल। इसी संदर्भ में यह भी कहना तर्कसंगत है कि

कुछ विषयों जैसे संगीत गृह विज्ञान साहित्य ललित कला आदि में लड़कियां रुचि रखती हैं जबकि लड़के विज्ञान गणित सामाजिक एवं यांत्रिक विषयों में।